आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2434 • उदयपुर, सोमवार 23 अगस्त, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

संस्थान द्वारा हैदराबाद (तेलंगाना) में राशन वितरण

नारायण सेवा संस्थान यों तो दिव्यांगता मुक्ति अभियान में प्रमुख रूप से सेवारत है किंतु कोरोना काल में जरूरतमंदों के लिये विविध प्रकार की सेवा में अग्रणी रहा है। आप सभी के आशीर्वाद से देशभर के करीब 50 हजार परिवारों को राशन–सामग्री प्रदान करने का सौभाग्य पाया है। यह प्रक्रिया अनवरत जारी है।

ऐसा ही एक राशन वितरण शिविर नारायण गरीब परिवार राशन–योजना के अंतर्गत नारायण सेवा संस्थान आश्रम लीलावती भवन इस्लामिया बाजार कोटी हैदराबाद में 08 अगस्त 2021 को आयोजित किया गया। नारायण सेवा संस्थान की इस शाखा द्वारा कुल 55 परिवारों को राशन–किट प्रदान किये गये।

शिविर प्रभारी श्री महेन्द्र सिंह जी के अनुसार इस कार्यक्रम में जो अतिथिगण पधारे उनके शुभनाम निम्नलिखित हैं–मुख्य अतिथि श्री गोविन्द जी राठी (मंत्री राजस्थानी प्रगति समाज एवं महेश बैंक निदेशक), अध्यक्ष तरुण जी मेहता (हैदराबाद सिकन्दराबाद गुजराती ब्राह्मण समाज अध्यक्ष), विशिष्ट अतिथि श्री ए. के. वाजपेयी (पूर्व पुलिस अधिकारी), श्री प्रघा गुगलिया जी जैन (जैन रत्न श्राविका मण्डल), श्री अभय जी चौधरी(समाजसेवी), श्री रिद्धिश जी जागीरदार (प्राणी मित्र, रमेश जागीदार फाउण्डेशन), श्री आर. के. जैन (भारत हिन्दू महासभा अध्यक्ष, तेलंगाना), श्रीमती अलका जी चौधरी (शाखा संयोजक)। शिविर टीम में जयप्रकाश जी एवं श्री अरुणा संध्यारानी जी का राशन वितरण में योगदान रहा, शिविर के लाभार्थी जन अत्यंत प्रसन्न थे।

कैथल (हरियाणा) में राशन वितरण

नारायण सेवा संस्थान ने कोरोना से प्रभावित परिवारों तथा जरूरतमंदों को लॉकडाउन व अनलॉक काल में राशन वितरण की सेवा प्रारंभ की है। देशभर के 50000 परिवारों को इसका लाभ दिया जा रहा है।

इस शृंखला में संस्थान की कैथल शाखा द्वारा 26 जुलाई को राशन वितरण शिविर लगाकर 38 परिवारों को राशन किट प्रदान किये। प्रत्येक किट में आटा, दाल, चावल, घी, तेल नमक लाल मिर्चि पाउडर, धनिया, शक्कर आदि सामग्री समाहित है।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान विकास जी शर्मा, अध्यक्ष श्रीमान सतपाल जी गुप्ता, विशिष्ट अतिथि श्री रामकरण जी, श्री मदनलाल जी मित्तल, श्री सतपाल जी मंगला शाखा संयोजक, श्री दुर्गाप्रसाद जी, श्री सोनू जी बंसल, श्री जितेन्द्र जी बंसल।

शिविर टीम लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), रामसिंह जी सहायक।

संस्थान द्वारा रतलाम में राशन सेवा

नर को नारायण का स्वरूप मानते हुए असहाय दिव्यांग, मूक– बधिर एवं कोरोना महामारी के चलते बेरोजगार हुए व्यक्तियों को नारायण सेवा द्वारा रतलाम में 40 निर्धन परिवारों को निःशुल्क राशन किट वितरित किए गये। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री मंगल जी लोढ़ा (पार्षद), अध्यक्ष श्रीमान विकास जी, विशिष्ट अतिथि श्रीमान् ब्रजेश जी कुशवाह, श्री मंगलसिह जी श्री मान विरेन्द्र जी शक्तावत, श्री मान प. हितेश जी, श्री भरत जी पोरवाल, श्री नरेन्द्र सिंह जी पधारे।

शिविर प्रभारी श्री मुकेश जी शर्मा ने बताया कि ऐसे जरूरतमंदों के लिए नारायण गरीब परिवार राशन योजना के माध्यम से 50 हजार परिवारों तक राशन पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित किया है इसी क्रम में रतलाम में राशन वितरण शिविर आयोजित किया गया। प्रत्येक किट में 15 किलो आटा, 2 किलो दाल, 5 किलों चावल, 2 किलो तेल, 4 किलो चीनी, 1 किलो नमक एवं मसाले प्रदान किए गए।

नारायण गरीब परिवार राशन योजना तहत् बरेली में 60 जरुरतमंद परिवारों को राशन वितरण

नर को नारायण का स्वरूप मानते हुए नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर की ओर से 60 निर्धन परिवारों को निःशुल्क राशन किट वितरित किये गये। संस्थान पिछले 10 माह उदयपुर मुख्यालय सहित देश की सभी शाखाओं के माध्यम से निःशुल्क भोजन व राशन वितरण की सेवाएं दे रहा है। संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि इसी क्रम में रविवार को बरेली में राशन वितरण का शिविर आयोजित किया गया। प्रत्येक किट में 15 किलो आटा, दो किलो दाल, पांच किलो चावल, दो किलो रिफाइंड तेल, चार किलो चीनी व एक किलो नमक सहित मसाले दिये गए। स्थानीय आश्रम प्रभारी श्रीमान कुंवर पाल सिंह जी ने बताया कि बरेली शिविर में श्रीमान अनिल जी गुप्ता, श्रीमान विकास जी, डॉ. विनोद जी गोयल, श्री मान सतीश जी अग्रवाल एवं मुकेश कुमार सिंह जी सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

नरवाना (हरियाणा) में कृत्रिम अंग वितरण शिविर

नारायण सेवा संस्थान द्वारा दिव्यांगों की सेवार्थ देश–विदेश में निःशुल्क शिविर लगाकर उन्हें राहत पहुंचाने का क्रम जारी है। इसी क्रम में 25 जुलाई 2021 को मिलन पैलेस नरवाना, जिला– जींद (हरियाणा) में विशाल निःशुल्क कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया गया। नारायण सेवा संस्थान की नरवाना शाखा द्वारा आयोजित इस शिविर मे 37 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाये गये व 25 को कैलीपर्स प्रदान किये गये।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि मंहत श्री अजयगिरि जी महाराज, अध्यक्ष श्री भारत भूषण जी गर्ग– (पूर्व अध्यक्ष नगर परिषद्), विशिष्ट अतिथि डॉ. जयसिंह जी गर्ग (समाजसेवी), श्री राजेन्द्र जी गर्ग (स्थानीय शिविर प्रभारी), श्री प्रवीण जी मित्तल एवं श्री राकेश शर्मा (समाजसेवी) पधारे। टेक्नीशियन श्री भंवर सिंह जी एवं श्री नरेश जी वैष्णव ने श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी),श्री भरत जी (सहायक), श्री मुन्ना जी (कैमरामेन) श्री रामसिंह जी (आश्रम साधक) आदि की टीम के साथ सेवाएं प्रदान की।

आशियाना फिर बसा
मदद को तरसती पत्नी और मासूमों को नारायण सेवा ने संभाला

उदयपुर जिले के आदिवासी बहुल जोर जी का खेडा निवासी मीना (बदला हुआ नाम) का पति अहमदाबाद में नमकीन की दुकान पर काम करता था।

कोरोना की दूसरी लहर में खराब तबीयत के चलते वो गांव आया और दो दिन बाद मृत्यु हो गई। एक तरफ पत्नी पति की मौत से दुःखी थी तो दूसरी तरफ तीन बेटियों और वृद्ध सासू मां की चिंता भी उसे सता रही थी।

असमय मौत से असहाय परिवार के घर में न आटा था, न दाल और न ही पैसा। भोजन को मोहताज परिवार पर ताउते तूफान का कहर भी ऐसा बरपा की टूटी– फूटी छत भी उड़ गई। परिवार के पांचों जन ने बारिश में रातें गुजारी तो बाद में तेज धूप में तपने को मजबूर हो गए।

नारायण सेवा संस्थान ने ली सुध–

संस्थान की आदिवासी क्षेत्रों में राशन बांटने वाली टीम को पता चला तो वे वहां पहुंचे। दुःखी परिवार को ढ़ाढस बंधाते हुए मदद के लिये हाथ बढ़ाया ।

हर माह मिलेगा राशन–

मृतक मजदूर परिवार को संस्थान ने मौके पर ही महीने भर का आटा, चावल, तेल, शक्कर, चाय, दाल, और मसाले दिए। हर माह इस परिवार को राशन दिया जाता रहेगा।

संस्थान बनाएगा पक्की छत –

घर की छत का निर्माण भी संस्थान द्वारा करवा लिया गया । जब बरसात के दिनों में उन्हें तकलीफ नहीं होगी।

टूटने से बची सांसो की डोर

मेरा नाम सुशीला है मेरे पति की 3 साल पहले मौत हो गई थी। मेरे 12 साल का एक बेटा है। मैं घरों में झाडू – पौछा करने का काम करती हूँ। 5000– 6000 रुपये महीने का कमाकर जी रही हूँ। एक रात मुझे खाना बनाते सर्दी लगी और तेज खांसी आने लगी । खाना बनाकर सो गई रात में बुखार भी आ गया ।

सांस लेने में परेशानी –

मैं अस्पताल गई। डॉक्टर्स ने कोरोना की जांच कर दवा दी और घर पर आराम करने की सलाह दी। दूसरे दिन मुझे सांस लेने में तकलीफ होने लगी । तभी मुझे मेरी बहन ने फोन पर बताया कि नारायण सेवा से ऑक्सीजन मंगा लो।

मैंने संस्थान से ऑक्सीजन का सिलेंडर मांगा तो उनके कार्यकताओं ने तत्काल घर पर पहुंचाया। उसी दिन से संस्थान ने भोजन पैकेट भी भेजने शुरू कर दिए। 5 – 6 दिन में मेरी तबीयत ठीक हो गई ।

सम्पादकीय

हँसना केवल इंसान के लिये ही संभव है। इस सृष्टि में परमात्मा ने इंसान को ही हास्य क्षमता दी है। तो इसके पीछे अवश्य कोई न कोई बड़ा रहस्य होगा ही। सच तो यह है कि व्यक्ति अपने उत्तरदायित्वों तथा सांसारिक व्यवहार के कारण गाहे–ब–गाहे खिन्न या परेशान हो सकता है। इस परेशानी को दूर करने, झटकने के लिए हास्य ही वह उपक्रम है जो व्यक्ति में पुनः ताजगी भर देता है। हास्य के द्वारा ही व्यक्ति की सम्पूर्ण प्रतिभाएं खिलती है। शरीर विज्ञानी भी हँसी को एक टॉनिक की भाँति मानते हैं। हँसने से मांसपेशियों का भी सूक्ष्म व्यायाम संपन्न हो जाता है।

पर इन सबसे महत्वपूर्ण है कि हँसी से व्यक्ति का विषाद काफूर हो जाता है, वह दूसरों को भी खुश रखने का कारण बनकर सुखी मानवता की नींव को सुदृढ़ करता है। इसलिये प्रभु की इस सौगात को खूब बढ़ायें, हँसे और हँसायें।

कुछ काव्यमय

हँसी–खुशी सबही रहे,
तो जीने का मोल।
बाकी तो कट ही रहा,
होना था अनमोल।।
हँसने का वरदान बस,
मानव के ही पास।
इस दुर्लभ वरदान का,
करा करो अहसास।।
करो जतन कितना मगर,
हँसना है ना खेल।
पर हँसने से ही लगे,
दुख पे तुरत नकेल।।
हँसने से जीवन खिले,
तन में रहे उमंग।
दिल में खुशियों से भरी,
उठती रहे तरंग।।
हँसना भी तो योग है,
हँसिये योगीराज।
उम्र बढ़े चिन्ता घटे,
यह जीवन का राज।।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

मां –बाप सबसे बड़ा धन

किसी गांव में एक बुजुर्ग सज्जन अपने बेटे और बहू के साथ रहते थे। परिवार सुखी संपन्न था। किसी तरह की कोई परेशानी नहीं थी। बुजुर्ग पिता जो किसी समय अच्छे खासे नौजवान थे आज बुढ़ापे से हार गए। चलते समय लड़खड़ाते थे। चेहरा झुर्रियों से भर चुका था। बस अपना जीवन किसी तरह व्यतीत कर रहे थे। घर में एक चीज अच्छी थी कि शाम को खाना खाते समय पूरा परिवार एक साथ टेबल पर बैठकर खाना खाता था। एक दिन ऐसे ही शाम को जब सारे लोग खाना खाने बैठे। बेटा ऑफिस से आया था। भूख ज्यादा थी सो जल्दी से खाना खाने बैठ गया। साथ में बहू और एक बेटा भी खाने लगे।

बूढे पिता के हाथ जैसे थाली उठाने को हुए थाली हाथ से छिटक गई। थोड़ी दाल टेबल पर गिर गई। बहू बेटे ने घृणा दृष्टि से पिता की ओर देखा और फिर से अपने खाने में लग गए। बूढ़े पिता ने जैसे ही अपने हाथों से खाना खाना शुरू किया तो खाना कभी कपड़ों पर गिरता कभी

जमीन पर। बहू ने चिढ़ते हुए कहा हे राम कितनी गंदी तरह से खाते हैं मन करता है इनकी थाली किसी अलग कोने में लगवा दो। बेटे ने भी ऐसे सिर हिलाया जिसे वह पत्नी की बात से सहमत होता। पोता यह सब मासूमियत से देख रहा था।

अगले दिन पिता की थाली उस टेबल से हटाकर एक कोने में लगवा दी गई। ताकि पोते की आंखें सब कुछ देखते हुए भी कुछ बोल नहीं पा रही थी। पिता खाना खाने लगे । खाना कभी इधर गिरता कभी उधर। छोटा बच्चा अपना खाना छोड़ कर लगातार अपने दादा की तरफ देख रहा था। मां ने पूछा क्या हुआ बेटे तुम दादाजी की तरफ क्यों देख रहे हो खाना क्यों नहीं खाते ? बच्चा बड़ा मासूमियत से बोला मैं सीख रहा हूं कि बडे बुजुर्ग के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। जब मैं बड़ा हो जाऊंगा और आप लोग बुड्ढे हो जाओगे तो मैं भी आपको इसी तरह कोने में खाना खिलाया करूंगा।

बच्चे के मुंह से ऐसा सुनते ही बेटे और बहू दोनों कांप उठे। शायद बच्चे की बात उनके मन में बैठ गई थी । क्योंकि बच्चे ने मासूमियत के साथ एक बहुत बड़ा सबक दोनों को दिया था । बेटे ने जल्दी से आकर पिता को उठाया और वापस टेबल पर खाने के लिए बिठाया और बहू भी भागकर पानी का गिलास लेकर आई कि पिताजी को कोई तकलीफ ना हो।

तो मां–बाप इस दुनिया की सबसे बड़ी पूंजी है। आप समाज में कितने भी इज्जत कमा लें या कितना भी धन इकट्ठा कर ले लेकिन मां–बाप से बड़ा धन इस दुनिया में कोई नहीं है।

–कैलाश 'मानव'

ईश्वर की लीला

एक बार बादशाह अकबर ने बीरबल से 3 प्रश्न किये –

1. ईश्वर कहाँ है?
2. वह कैसे मिलता है?
3. वह करता क्या है?

इन प्रश्नों को सुनकर बीरबल असमंजस में पड़ गए कि इसका क्या जवाब दूँ। दूसरे दिन उनको जवाब देना था। उनको उत्तर सूझ नहीं रहा था। बीरबल घर पहुँचे, उन्होंने परिवार में चर्चा की, तब उनके बेटे ने कहा कि पिताजी मुझे ले चलो, मैं इन तीनों प्रश्नों के उत्तर दूँगा।

अगले दिन बीरबल बेटे को लेकर दरबार पहुँचे। अकबर ने दरबार में बीरबल से पूछा– मेरे तीन प्रश्नों का उत्तर दो, तब बीरबल ने कहा कि मैं क्या, मेरा बेटा भी आपके प्रश्नों का जवाब दे सकता है।

अकबर ने कहा– ठीक है, मैं प्रश्न पूछता हूँ– पहला प्रश्न– ईश्वर कहाँ है?

बीरबल के पुत्र ने कहा– बादशाह

सलामत! दूध और शक्कर मंगाइये।

बादशाह के इशारे पर दरबार में एक गिलास में दूध और शक्कर आ जाती है।

बीरबल पुत्र ने कहा– दूध में शक्कर घोल दीजिए।

बादशाह वैसा ही करता है, जैसा बीरबल का बेटा कहता है। शक्कर दूध में मिल जाती है।

बीरबल पुत्र ने कहा कि अब इसमें शक्कर कहाँ है, जरा ये ढूंढने की कोशिश कीजिए।

बादशाह ने कहा कि शक्कर तो नहीं दिख रही है, दूध में पूरी तरह घुल गई है।

बीरबल पुत्र ने कहा– जहाँपनाह! इसी तरह से परमात्मा भी दिखता नहीं, किंतु वह हर जगह विद्यमान है। केवल हम महसूस कर सकते हैं। यह आपके पहले सवाल का जवाब है।

दूसरा प्रश्न – वह कैसे मिलता है?

बीरबल पुत्र ने बादशाह अकबर से दही की व्यवस्था करने के लिए कहा। दही आने पर बीरबल पुत्र ने कहा कि जहाँपनाह इसे देखकर बताएँ कि क्या इसमें आपको मक्खन दिख रहा है?

बादशाह ने कहा कि वह तो मंथन पर ही दिखेगा।

बीरबल पुत्र तपाक से बोला कि महाराज इसी तरह बहुत मंथन, चिंतन और प्रयास करने पर ही ईश्वर की प्राप्ति होती है। अकबर दूसरे प्रश्न से भी संतुष्ट हो जाते हैं।

अब वे तीसरा प्रश्न रखते हैं –ईश्वर करता क्या है?

बीरबल पुत्र ने कहा कि इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए आपको मुझे अपना गुरु मानना पड़ेगा।

बादशाह ने कहा– ठीक है मान लिया।

बीरबल पुत्र तुरंत बोला– गुस्ताखी माफ जहाँपनाह! आप सिंहासन पर बैठे हैं और मैं यानी आपका गुरु, नीचे खड़ा हूँ।

तीसरे प्रश्न का उत्तर जानने के लिए बादशाह बहुत जिज्ञासु थे। वे बिना सोचे–समझे तुरंत अपने सिंहासन से नीचे आ गए और बीरबल पुत्र को गुरु मानने की वजह से सिंहासन पर बिठा दिया।

सिंहासन पर बैठते ही बीरबल पुत्र ने कहा कि महाँपनाह ये आपके तीसरे प्रश्न का उत्तर है। ईश्वर यही करता है। वह जब चाहे तब, बादशाह को फकीर और फकीर को बादशाह बना सकता है। आप मुझे देख लें। तीनों के प्रश्नों के उत्तर जानकर बादशाह अकबर बहुत प्रसन्न हुए। उनकी जिज्ञासा शांत हो गई और उन्होंने इनामो–इकराम के साथ बीरबल पुत्र को विदा किया।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

यह वो समय था जब फोन स्वचलित नहीं थे। बड़े बड़े शहरों में तो स्वचलित फोन थे जिन पर नम्बरों का डायल लगा होता था, कहीं भी टेलीफोन करने के लिये वांछित नम्बर डायल कर दो तो फोन मिल जाता था। उदयपुर में ऐसे फोन नहीं थे इसलिये टेलीफोन करने के लिये ऑपरेटर को वांछित नम्बर बताने पड़ते थे। टेलीफोन करने के लिये ज्यूं ही चोगा उठाते तो उधर से ऑपरेटर की आवाज आती–नम्बर प्लीज। तब आसपास भी कहीं फोन करना होता तो ट्रंक काल बुक कराना पड़ता। शिकायत करने, किसी का नम्बर जानने वगैरह के अलग अलग निर्धारित थे। 198, 197, 180 ऐसे प्रमुख नम्बर थे जिनसे टेलीफोन उपभोक्ताओं का प्रतिदिन काम पड़ता था।

एक दिन कैलाश अपने कार्यालय में बैठा रोज का काम काज निपटा रहा था तभी एक व्यक्ति ने प्रवेश किया इसके हाथों में एक टोकरा था। इस व्यक्ति ने यह टोकरा कैलाश के टेबल पर ला कर पटक दिया। कैलाश अचानक उपस्थित हुए इस व्यवधान से चौंक गया। टोकरे में गुलाब के फूल थे। उसने सोचा जरूर कार्यालय में किसी ने मंगवाये होंगे। उसने प्रसन्न होकर अपनी निगाहें उपर की तो उसे उस व्यक्ति का तमतमाता चेहरा नजर आया। वह गुस्से से आग बबूला हो रहा था। कैलाश ने उपर देखते ही वह आवेश से बोल पड़ा–ये फूल काफी हैं या और लाऊं। कैलाश कुछ समझ नहीं पाया। एक तरफ तो यह व्यक्ति फूल लेकर आया और दूसरी तरफ वह इतना क्रोधित हो रहा है। कैलाश ने अपनी जिज्ञासा को विराम दिया और व्यक्ति को अपने पास ही पड़ी कुर्सी पर बैठने को कहा। उसे पानी पिलाया। उसके चेहरे पर अब थोड़ी शांति महसूस हुई तब उसने फिर पूछा–इतने फूल काफी हैं या और लाँऊ?

अंश - 92

गले में दर्द– काली मिर्ची – गुड़ चूसें

सरदी जुकाम होते ही घर में रखी चीजों का इस्तेमाल कर राहत पा सकतें हैं। जैसे काली मिर्चि, हल्दी, सौंठ, छोटी, पीपल का पाउडर बनाकर रखें। शुरूआती लक्षण दिखने के साथ ही इसे शहद के साथ लेना शुरू कर दें। अगर सूखी खांसी है तो इसमें हल्का सेंधा नमक व शहद के साथ चाटें। इससे कफ निकलेगा। इसके अलावा यदि नाक बंद की समस्या है तो इलायची पाउडर कर्पूर और मेथॉल वाली चीजों को कपड़ों में बांधकर इसे हर आंधे घंटे पर सूंधे आराम मिलेगा।

गले में दर्द से आराम –

गले में दर्द है तो कालीमिर्चि पाउडर को गुड के साथ छोटी – छोटी गोली बनाकर चूसने से दर्द से आराम मिलेगा।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

आमदरी में सेवा सावनोत्सव

नारायण सेवा संस्थान ने गिर्वा तहसील के आदिवासी बहुल गांव आमदरी में आदिवासी परिवारों के साथ 'सावनोत्सव' मनाया। इसमें गुजरात के अहमदाबाद व राजकोट के 70 से अधिक संस्थान सहयोगियों व साधकों ने भाग लिया। कार्यक्रम में आमदरी व आसपास फलों–ढाणियों के गरीब परिवारों को राशन किट, पोषाहार, छाते व वस्त्रों का वितरण किया गया। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि सेवा शिविर से पूर्व भगवान शिव की पूजा–अर्चना हुई। संस्थान संस्थापक पद्श्री कैलाश जी 'मानव' के संदेश प्रसारण के साथ शिविर का समापन हुआ । संचालन निदेशक वंदना जी अग्रवाल ने किया।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अनुभव अमृतम्

अरे! मैं काले भी आऊं, अठे बहनजी मिल्या मुस्कराइर्‌या था। वणा रे कैन्सर वेई ग्यो थो। बोली नी आवे तो ईशाराऊं वात करिरया था। कई वात नी, कई वात नी कैन्सर वेई ग्यो तो पराजावा। ऊपरे भगवान रे जावा जतरे भगवान राखे जतरा ठीक हाँ।

अरे! मैं उनके कल भोजन ले के आऊंगी। जरूर ले आणा। केसी लीला रचा रहे हो, मुझ में रहकर मुझसे प्यारे मेरी खोज करा रहे हो ठाकुरजी थारी कृपा तूं ही म्हाने सिरोही लायो।

रोज– रोज हॉस्पीटल जावा ने गणो आच्छो लागे। हाँ, सोहनलालजी पाटनी साहब, दवाइयों की व्यवस्था। पूरणमलजी शर्माजी साथ चलते। एक दिन दो–तीन भाई आये बोलते– हरि ऊँ, हरि ऊँ।

आइये, भैया आइये भैया आओ बैठो। नमस्कार नमस्कार, नमस्कार आइये बैठिये। आपको परिचय, बोले– हम अठावले महाराज के भक्त हैं, शिष्य हैं। हमारी संस्था का नाम स्वाध्याय संस्था है।

अठावलेजी महाराज गीता पर प्रवचन देते हैं। उनका तीन दिन का शिविर सिरोही में बीस दिन बाद लगने वाला है। पाण्डुरंग जी शास्त्री अठावले स्वयं महाराज जी पधारेंगे, हमारे गुरुदेव, हम आपको पीले चावल देने आये हैं।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 219 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023